



लोकाट की व्यावसायिक खेती

सन्नी शर्मा* और विशाल सिंह राणा**

लोकाट को लुकाट या लुगाठ के नाम से भी जाना जाता है। यह एक पौष्टिक फल है। इसके सेवन से अनेक रोगों में फायदा मिलता है। यह त्वचा रोग, आँखों की दृष्टि, उच्च रक्तचाप, पेट के रोग, लीवर के विकार आदि रोगों में काफी लाभदायक होता है। इसके अलावा यह हड्डियों को मजबूत करता है, एवं रक्त को बढ़ाता है। यह मध्य चीन के मृदुशील और नम क्षेत्रों का देशज है। भारत में इसे सर्वप्रथम शासकीय वानस्पतिक उद्यान, सहारनपुर में उगाया गया था। यहीं से इसे अन्य स्थानों के लिए वितरित किया गया है। जापान से जापान प्लम या जापानी मेडलर के नाम से यह भारत लाया गया था। इस फल की उत्पत्ति पूर्वी चीन में हुई है। विश्व में इसकी खेती चीन, ताईवान, कोरिया, जापान आदि देशों में होती है। भारत में इसकी खेती पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में मुख्य रूप से की जाती है लेकिन महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार आदि राज्यों में भी बड़े स्तर पर इसकी खेती की जाती है। व्यावसायिक रूप में इसे सहारनपुर, देहरादून, मेरठ, कानपुर, दिल्ली, पंजाब के अमृतसर, होशियारपुर तथा गुरदासपुर एवं हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में उगाया जाता है।

लोकाट उपोष्ण जलवायु का फल है। यह कम तापक्रम तथा सूखा कुछ सीमा तक ही सहन कर सकता है। शुष्क हवाओं के चलने से भी फल छोटे रह जाते हैं और पक नहीं पाते हैं। गर्म क्षेत्रों में छाया में अच्छे होते हैं। व्यावसायिक फल उद्यान लगाने के लिए यह एक उपयुक्त फल है। इसके लिए जलवायु की उपयुक्तता का भी ध्यान रखना चाहिए।

*कृषि विद्यालय, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी;
**फल विज्ञान विभाग, डॉ यशवंत सिंह परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी-सोलन, हिमाचल प्रदेश

औषधीय महत्त्व

लोकाट का उपयोग ताजे फलों के रूप में किया जाता है। यह कच्चा खाने पर खट्टा तथा पकने पर मीठा हो जाता है। इसका पुष्प कफ निःसारक, अस्थमा, मिर्गी व क्षयरोग में लाभदायक होता है। पत्तियों का उपयोग अतिसार में किया जाता है। यह एक पौष्टिक फल है। इसके सेवन से अनेक रोगों में फायदा मिलता है। इससे त्वचा रोग, आँखों की दृष्टि, उच्च रक्तचाप, पेट के रोग, लीवर के विकार आदि रोगों में काफी फायदा होता है। इसके अलावा यह हड्डियों को मजबूत करता है एवं रक्त को बढ़ाता है।

सारणी: लोकाट में पोषक तत्वों की मात्रा

पोषक तत्व	मात्रा: प्रति 100 ग्राम ताजा फल
प्रोटीन	0.6 ग्राम
वसा	0.2 ग्राम
कार्बोहाइड्रेट	9.6 ग्राम
रेशा	1.7 ग्राम
लोहा	0.5 मि. ग्रा.
फॉस्फोरस	30 मि. ग्रा.
ऊर्जा	43 किलो कैलोरी

किस्में

लोकाट की किस्मों को दो भागों में विभाजित किया गया है। एक चाडूना समूह जिसमें फल बड़े, नाशपाती आकार के व गहरे नारंगी होते हैं, तथा दूसरा जापानी समूह जिसके फल छोटे, पतले व हल्के रंग के होते हैं। गोल्डन येलो, थॉमस प्राइड, इम्प्रूव्ड पेल येलो, लार्ज कैलीफोर्निया एडवांस, टनाका व फॉयर बाल आदि इसकी प्रमुख किस्में हैं। पंजाब, हिमाचल प्रदेश व दिल्ली के लिए इम्प्रूव्ड गोल्डन येलो, फॉयरबाल, तनाका आदि उन्नत किस्में उगाई जा सकती हैं। उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल के लिए गोल्डन येलो, इम्प्रूव्ड, गोल्डन येलो, थेम्स प्राइड, लार्ज आगरा, इम्प्रूव्ड पेल येलो, गोल्डन रेड, मैचलेस, कैलीफोर्निया एडवांस, तनाका आदि प्रमुख उन्नत किस्में उगाई जा सकती हैं।

जलवायु एवं भूमि

इसकी खेती के लिए उपोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। इस जलवायु में पौधा अच्छी तरह पनपता है। इसकी खेती समुद्रतल से 1200 मीटर की ऊंचाई तक की जा सकती है। यह फल कोहरे में भी अच्छी तरह वृद्धि करता है। लोकाट की अच्छी उपज के लिए सामान्य उपजाऊ भूमि सर्वोत्तम होती है। इसकी खेती दोमट व बलुई दोमट मिट्टी में सबसे उपयुक्त होती है। इस बात का ध्यान रखें कि भूमि से उचित जल निकास की व्यवस्था होनी चाहिए।

उद्यानिक क्रियाएं

प्रबन्धन

सामान्य रूप से लोकाट के पौधे गूटी और उपरोपण द्वारा तैयार किए जाते हैं। उपरोपण द्वारा पौधे तैयार करने के लिए बीजों को फल से निकालकर मूलवृत्त के लिए तुरन्त बोया जाता है। फरवरी माह में कलिकायन की रिंग चश्मा विधि द्वारा पौधे तैयार किये जाते हैं। रोपण अन्तर 6 मीटर x 6 मीटर, गड्ढों



स्वादिष्ट लोकाट पोषण से भरपूर



लोकाट के फल

का आकार 1.0 मीटर x 1.0 मीटर x 1.0 मीटर रखना चाहिए। अच्छे फलन के लिए 750 ग्राम नाइट्रोजन, 300 ग्राम फॉस्फोरस तथा 750 ग्राम पोटाश प्रति पौध की दर से उर्वरक डालने चाहिए। सिंचाई का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

लोकाट की अच्छी उपज के लिए पौधे को खाद एवं उर्वरक देना बहुत ही जरूरी है। इसके लिए गोबर की खाद 90 किलोग्राम, नाइट्रोजन 440 ग्राम, फॉस्फोरस 380 ग्राम, पोटाश 150 ग्राम, व कैल्शियम ऑक्साइड 337 ग्राम प्रति पेड़ प्रतिवर्ष डालना चाहिए। खाद पौधे के चारों ओर फैलाव में छिड़ककर मिट्टी में मिलाकर देनी चाहिए। फॉस्फोरस उर्वरक को नालियों में देना ठीक रहता है। लोकाट की अच्छी वृद्धि के लिए समय-समय पर सिंचाई करना आवश्यक है। सबसे पहले पौधे लगाने के तुरंत बाद ही सिंचाई करनी चाहिए। इसके बाद तीन या चार दिनों बाद पुनः सिंचाई करनी चाहिए। इसके बाद गर्मी के मौसम में 10 से 15 दिनों बाद और जाड़ों के मौसम में 25 से 30 दिनों बाद सिंचाई जरूर करें। इसके अलावा आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। खरपतवारों को हाथ से गुड़ाई करके या रसायनों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। ग्लाइफोसेट 1.6 लीटर को प्रति 150 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। ग्लाइफोसेट का स्प्रे सिर्फ खरपतवारों पर ही करें, मुख्य फसल पर ना करें।

फलों को पूरे पुष्पगुच्छों और प्ररोह के छोटे भाग के रूप में काटा जाता है। नई

वृद्धि पाने के लिए इतनी कांट-छाँट पर्याप्त है। यदि कुछ शाखाएँ हटानी हों तो इन्हें जून में हटा देना चाहिए।

फलों की तुड़ाई एवं भंडारण

इसके तैयार पौधे में सितम्बर से फरवरी तक फूल आने लगते हैं। इसके फल पकने का समय मार्च से अप्रैल होता है। फलों का रंग सुनहरा पीला या नारंगी व कुल विलय ठोस 11.0 प्रतिशत हो जाने पर तोड़ लेना चाहिए। इसके फलों की संग्रहण क्षमता कम होती है। सामान्य संग्रहण में इसे 3-4 दिनों तक रखा जा सकता है। शीत संग्रहण में 11° सेल्सियस तथा 85-90 प्रतिशत सापेक्ष आर्द्रता में 15 दिनों तक संग्रहित किया जा सकता है। बाजार में लोकाट के फल 50-60 रुपये प्रति किलोग्राम तक आसानी से बिक जाते हैं। इसकी औसत उपज 6-8 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

तुड़ाई उपरान्त प्रबन्धन

ज्यादातर फल ताजा खाये जाते हैं। फलों से जैम, जैली, मुरब्बा, कैनिंग व चटनी आदि उत्पाद भी तैयार किये जाते हैं। श्रेणीबद्ध फलों को बक्सों में ठीक से पैक किया जाता है। बक्से लकड़ी या कार्ड बोर्ड के हो सकते हैं। अच्छे आकार के बिना कटे हुए फलों को 'ए' ग्रेड में और छोटे आकार के अच्छे फलों को 'बी' ग्रेड में पैक किया जाना चाहिए। बाकी फलों को अलग से पैक किया जा सकता है। पेपर कटिंग को प्रत्येक बॉक्स के नीचे और विभिन्न परतों को कुशन प्रदान करने के लिए रखा जा सकता है।